Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XII, Issue No. 23, October-2016, ISSN 2230-7540

गाँधी जी के आर्थिक विचारों की सार्थकता

Sudesh Rani[1]* Dr. Sunil Jangir[2]

[1]Research Scholar, OPJS University, Churu, Rajasthan

[2]Associate Professor, OPJS University, Churu, Rajasthan

----------X----------

आज गांधी जी का आर्थिक सिद्धान्त उन बहुत से विचारकों के लिए शोध का विषय है जो किसी वि"ोष लक्ष्य पर नया प्रका"ा डालना चाहते हैं। गांधी जी के विचारों की नये संदर्भ में व्याख्या करने से दबी हुई सामाजिक–आर्थिक सोच योजना और कार्यों के समाधान में मदद मिलती है जो अपने दे"ा की ही नहीं बल्कि संसार के सभी दे"ाों की समस्याओं के प्रति भी वही दृष्टिकोण रखती है। इसके अतिरिक्त किसी को भी इस तथ्य को अनदेखा नहीं करना चाहिए कि गांधी जी अर्थ"ाास्त्री नहीं थे। उन्होंने कभी भी गहराई से आर्थिक व्यवस्था और उसको प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन नहीं किया और न ही पूर्णतया पूंजिवाद की गति"ाीलता को समझ सके। यहाँ चर्चा का मुख्य विषय ही है कि हम गांधी जी के व्यक्तित्व और विचारों का आदर करें और आर्थिक सिद्धान्त का उद्दे"य जानें। आर्थिक सिद्धान्त से सम्बन्धित बहुत से महत्वपूर्ण प्र"न उदय होते हैं। वे इसकी सार्थकता से जुड़े हैं। क्या आर्थिक सिद्धान्त आधुनिक समय में सार्थकता रखता है और समकालीन भारतीय समाज इसकी सार्थकता है? क्या यह एक व्यावहारिक सिद्धान्त है, किस प्रकार ये सिद्धान्त लागू किया जा सकता है। इस सिद्धान्त की सार्थकता के विषय में विद्वानों के विचारों में विरोधाभास है। बहुत से विद्वानों की यह मान्यता है कि यह सिद्धान्त वर्तमान में व्यावहारिक नहीं है क्योंकि वर्तमान समय में वि"व औद्योगिकरण की चरम सीमा पर पहुँच गया है और मानव जाति मूलतया संग्रह में लगी हुई है। अन्य विद्वान ऐसे भी हैं जो यह वि"वास करते हैं कि यह सिद्धान्त आधुनिक समय में सार्थकता रखता है।

आज भारत में इसकी सार्थकता के लिए अखिल भारत बुनकर संगठन, चरखा संघ, श्रमिक संघ, आदि को सार्थक रूप देने के प्रयास किए। बड़े–बड़े औद्योगिक घराने तथा पूंजिपति कर रूप में अपनी सम्पति का कुछ भाग सरकार को देते हैं और सरकार उस सम्पति का प्रयोग दे"ा, समाज व गरीब व्यक्तियों के विकास के लिए सदपयोग कर रही है। यह है तो गांधी जी के विचार पर आधारित है किन्तु इसका रूप बदल गया है।

आर्थिक क्षेत्र में स्वदे"ाी का अर्थ विकेन्द्रित उत्पादन है दूसरे शब्दों में प्राथमिक आव"कताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न क्षेत्रों को आत्मनिर्भर रहना चाहिए, गौण जरूरतों के लिए हमें एक दूसरे पर निर्भर रह सकते हैं। इस प्रकार स्वदे"ाी में स्वावलम्बन और परस्पर परावलम्बन दोनों ही आ जाते हैं आ"ाा यह की जाती है कि इस व्रत को अपनाने में उत्पादन केवल उपयोग के लिए ही न होकर मनुष्य के लिए ही होगा और उपभोक्ता की संतुष्टि अधिक होगी। इस व्रत का आ"य यह है कि पड़ौसीयों द्वारा निर्मित वस्तुओं को प्रोत्साहन देना चाहिए। गांधी जी आर्थिक समानता के पक्ष में थे इसलिए उन्होंने ग्रामोद्योग योजना के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। उनका मानना था कि पूरा का पूरा खादी अपना ले और खादी ग्रामोद्योग द्वारा अपना जीवन विकसित करें। यह तब तक कठिन है जब तक उस पर सामूहिक श्रद्धा नहीं होती, ऐसी श्रद्धा जगाने के लिए यह आव"यक है कि खादी पहनने का जो प्रचार व्यक्तियों तथा परिवारों में बढ़े तथा पूरे गाँव में खादी के महत्व का ज्ञान तथा अनुभव बढ़ाया जाए।

स्वदे"ाी के सामाजिक पहलू पर जोर देते हुए गांधी जी ने दे"ा भर में खादी को अपनाने का प्रचार किया। चरखे से सूत कातना और सूत से कपड़ा बनना खादी का काम है। खादी अर्थ व्यवस्था की पहली सीढ़ी है। स्वदे"ाी व्रत का अर्थ है कि हम इस घोर पाप का प्राय"चित करना चाहते हैं और जो करोड़ों रूपया भारत से बाहर चला जाता है, उसको हम बचाना चाहते हैं और उसका प्रयोग दे"ा के विकास में किया जाए। गांधी जी ने स्वदे"ाी को आर्थिक आधार का व्यापक रूप देते हुए कहते हैं कि शहरों द्वारा ग्रामीणों का शोषण बंद किया जाना चाहिए क्योंकि जिस प्रकार दे"ाी उद्योगों को विदे"ाी निर्माताओं से संरक्षण प्रदान किए गया है उसी प्रकार कुटीर उद्योगों को भी म"ाीन से बनी वस्तुओं के विरूद्ध सरंक्षण दिया जाना चाहिए।

गांधी जी बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण के कट्टर विरोधी थे। उनका वि"वास था कि बड़े पैमाने के उत्पादन से ही विभिन्न सामाजिक और आर्थिक दोष उत्पन्न हुए हैं म"ाीनों का प्रयोग मनुष्य को आलसी बना देता है और वे परिश्रम से कतराने लगते हैं। गांधी जी ने इसलिए विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था का पक्ष लिया अर्थात एक ऐसी अर्थव्यवस्था को उत्तम समझा जिसमें श्रमिक स्वयं अपना स्वामी हो। महात्मा गांधी का वि"वास था कि भारत जैसे अधिक जनसंख्या वाले और गरीब दे"ा के लिए म"ाीनों का प्रयोग लाभप्रद नहीं होगा। अधिक जनसंख्या को काम पर लगाने की दृष्टि से उत्पादन की ऐसी प्रणातियाँ काम में लानी होंगी जिनमें अधिकाधिक श्रमिकों की खपत हो। औद्योगिकरण के विरूद्ध होते हुए भी गांधी जी उस सीमा तक म"ाीनों के प्रयोग को अनुमति देते थे जहाँ वे सारे समाज के हित में बाधक न बनें। ''गांधी जी केवल उन्हीं म"ाीनों के विरूद्ध थे जिनके उपयोग से परिश्रम का बचाने की चेष्टा की जाती है। मनुष्य परिश्रम को बचाते चले जाते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि अन्त में लाखों व्यक्ति खुली सड़कों पर फिरते रहते हैं और भूखमरी उत्पन्न हो जाती है।'' गांधी जी का बल रचनात्मक उद्योगों पर या विना"ाकारी वस्तुओं को उत्पन्न करने वाले उद्योगों पर नहीं। वे गृह उद्योगों में काम आने वाली म"ाीनों के प्रयोग और सुधार के समर्थक थे उन्हें इस

www.ignited.in

बात से भी बड़ा कष्ट पहुँच था कि भारत के कपड़े के एक मात्र कुटीर उद्योग को नष्ट करने के लिए प्रयत्न किए जाएँ।

गांधी जी ने शरीर श्रम को भी महत्व प्रदान किया है इसलिए वे बड़ी–बड़ी म"ाीनों के स्थान पर लघु उद्योग स्थापित करने के पक्ष में थे। अतः उन्होंने शरीर श्रम के बारे में कहा है कि ''यज्ञ करो और खाओं' 'यज्ञ करो और जो शेष रह जाता उसको खाओ।'' यह बात मेरे लिए है आपके नहीं, ऐसा नहीं है यह सबके लिए है, जो दुःखी उनके लिए भी है। एक आदमी कुछ करे नहीं और खाए यह नहीं चल सकता। करोड़पति भी जिसके पास पैसा है वह भी मेहनत करके खाए, तभी काम बनता है।

खादी के पीछे जो विचारधारा है उसे समय के सामने कार्यरूप में उपस्थित करने की जिम्मेदारी हमारी है। इसलिए ग्रामसेवा मण्डल को मेरी यह सलाह है कि वह आठ घंटे की आठ आने की मजदूरी देकर खानी बनवाये। ग्रामीण अर्थव्यवस्था की जो कल्पना गांधी जी ने की है उसमें शोषण की बिल्कुल गुंजाई"ा नहीं है।

गांधी जी भारत की आर्थिक सच्चाईयों से वाकिफ थे और वे भली–भांति जानते थे कि भारत के करोड़ों लोगों को रोजगार देने के लिए साहित्यिक ि"ाक्षा के साथ–साथ औद्योगिक ि"ाक्षा देने के पक्ष में थे। उन्होंने कहा कि ''मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि औद्योगिक ि"ाक्षा के साथ साहित्यिक ि"ाक्षा नहीं बल्कि औद्योगिक ि"ाक्षा के द्वारा साहित्यिक ि"ाक्षा देनी चाहिए।

गांधी जी कहते थे कि भारत गाँव में रहता है शहरों में नहीं। गाँव वाले गरीब हैं क्योंकि उनमें अधिकतर बेरोजगार हैं या अल्प बेरोजगार की स्थिति में हैं इनको उत्पादक रोजगार देना होगा जिससे राष्ट्र की सम्पति में वृद्धि हो। वह कहते थे कि दे"ा की वर्तमान स्थिति में जब मानव शक्ति असीम है और उसकी तुलना में भूमि और अन्य शक्ति असीम है और उसकी तुलना में भूमि और अन्य प्राकृतिक साधन कम हैं तो कुटीर उद्योग ही रोजगार दे सकते हैं वह पि"चमी दे"ाों की तरह म"ाीनों पर आधारित पूंजि प्रधान उद्योग नहीं चाहते थे।

गांधी जी के विचार में एक ओर जहाँ खादी गरीब के लिए रोटी कमाने का एक सम्मानीय व्यवसाय है वहीं यह अहिंसक तरीकों से स्वराज हासिल करने का एक अतिरिक्त और अपेक्षाकृत अधिक मूल्यवान अस्त्र भी है। उनकी दृष्टि में खादी भारतवासियों की एकता, उनकी आर्थिक स्वाधीनता और समान्ता का प्रतीक है। खादी शास्त्र परमार्थ का शास्त्र है और इसी कारण इसे गांधी जी ने सच्चा अर्थ शास्त्र कहा है। खादी की मानसिकता का अर्थ है जीवन के लिए आव"यक वस्तुओं के उत्पादन और वितरण का विकेन्द्रीकरण। इसलिए प्रत्येक गाँव अपनी जरूरत की सभी चीजों का उत्पादन करें और साथ में शहरों की आव"यकताओं के लिए भी कुछ अतिरिक्त माल तैयार करें। ''मुझे वि"वास है कि हाथ की कताई और बुनाई के पुनरूद्धार से भारत के आर्थिक और नैतिक पुनः जीवन में सबसे बड़ा योगदान होगा।''

उपाध्याय, राम नारायण (2015). **''गांधी विचार यात्रा''**, भारतीय प्रका"ान संस्थान, नई दिल्ली.

अय्यर, राघवन (1997). **''दि मोरल एण्ड पोलिटिकल वार्निंग ऑफ महात्मा गांधी''**, कलारदन प्रैस, आक्सफोर्ड.

आनन्द, वाई.पी. (2015). **''नॉनवायलंस इॅन ए वायलंस वर्ड ए गान्धीयन रीसपोंस''**, गांधी स्मृति एण्ड द"ान समिति, न्यू दिल्ली.

अग्रवाल, अलका एवं अग्रवाल, ि"ाखा (2015). **''गांधी दर्शन (विविध आयाम)''**, पोइन्टर, पब्लि"ार्स, जयपुर.

Corresponding Author

Sudesh Rani*

Research Scholar, OPJS University, Churu, Rajasthan

E-Mail – ashokkumarpksd@gmail.com

www.ignited.in